22110131

International Baccalaureate®
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

**HINDI A1 – STANDARD LEVEL – PAPER 1**
**HINDI A1 – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1**
**HINDI A1 – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1**

Wednesday 11 May 2011 (morning)
Mercredi 11 mai 2011 (matin)
Miércoles 11 de mayo de 2011 (mañana)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only. It is not compulsory for you to respond directly to the guiding questions provided. However, you may use them if you wish.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire sur un seul des passages. Le commentaire ne doit pas nécessairement répondre aux questions d'orientation fournies. Vous pouvez toutefois les utiliser si vous le désirez.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento. No es obligatorio responder directamente a las preguntas que se ofrecen a modo de guía. Sin embargo, puede usarlas si lo desea.


© International Baccalaureate Organization 2011

https://xtremepape.rs/

*नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (१) तथा (२)। इन दोनों में से किसी **एक** पर व्याख्या लिखिए।*

*१.*

उन दिनों मेरे पिता पोर्टस्मथ में एक जहाजी बेड़े पर काम करते थे। पिता हर तीन महीने बाद घर आते। जब वे घर पर होते तो ममी (माँ) से एक पल की भी जुदाई नहीं सह पाते। ममी की हिदायत थी कि जब तक डैडी घर में हो तो हम बच्चे कम से कम समय उनके सामने आएं। मुझे तो उनके सामने जाने की सख्त मनाही थी। मैं अपना बिस्तर उन दिनों दु-छत्ती (एटिक) में लगा देती। स्कूल से आते ही मैं रसोई के वर्कटॉप पर रखे सैंडविच का पैकेट और पानी की बोतल उठा चूहे की तरह खामोश, लटकने वाली सीढ़ियाँ चढ एटिक में पहुँच ट्रैप-डोर बंद कर लेती। वह मेरे अकेलेपन को रास आता। उन दिनों मैं वहाँ एक अलग दुनिया बसा लेती। एटिक में दुनिया भर के अजूबे और गैर-जरूरी पुराने सामान ठूँसे हुए थे। अक्सर मैं वहाँ रखे लाल रंग के बीन-बैग पर बैठ खिड़की पर आते-जाते वाहनों या पड़ोसियों के पिछवाड़े वाले बगीचे में लगे पेड-पौधो, गिलहरियों और कुत्ते-बिल्लियों को इधर-उधर दौड़ते-भागते चिड़ियों और खरगोशों का पीछा करते देखती या फिर पुराने जमाने के बने गुदगुदे "सेशलॉग" पर स्लीपिंग बैग बिछा उसमें घुस सो जाती। सुबह तीन साल के छोटे रॉनी को छोड़ हम तीनों भाई-बहन ममी-डैडी के उठने से पहले दूध के साथ "कार्न-फ्लेक्स" खा स्कूल भाग लेते। स्कूल में दोपहर का खाना हमें निःशुल्क मिलता था क्योंकि हम लोग कम वेतन वाले परिवार से आते थे। मैं यदि कभी गलती से डैडी के सामने पड़ जाती तो वे बिना मेरा कान उमेठे और जूते से ठोकर मारे नहीं छोड़ते। मेरे भाई-बहन मुझे पीटते देख, सहम जाते और कोई मेरी मदद को नहीं आता। मैं उपेक्षित सदा खामोश और असमंजस में रहती कि मेरा अपराध क्या है ? क्यों डैडी मुझसे इस बेदर्दी से पेश आते हैं ? डैडी छुट्टियाँ ख़तम होने से पहले खाने-पीने का सामान लार्डर में रखने के साथ, ममी के सारे कर्जे भी चुका जाते। ममी स्वभाव से ही अल्हड़ और अव्यवस्थित थीं। डैडी की अनुपस्थिति में वे अक्सर हमें घर में अकेले छोड़ दोस्तों के साथ पब चली जाती थी। कभी कभी रात को भी वह घर नहीं आती थी। हमारा घर संदेहों से घिरा हुआ था। सरकारी सोशल वर्क्स हमारे घर का चक्कर जब-तब लगाते रहते। हमें चुप और सोशल कस्टडी में रहने की आदत सी पड़ चुकी थी। अक्सर ममी लड़-झगड़ और रो-धोकर, कसमें खाती हमें वापस घर ले आतीं। उस समय तक मुझे नहीं मालूम था कि ममी हमें चिल्ड्रेन अलाउंस और सोशल-बेनेफिट के लिए घर लाती थी। हम बच्चे ममी के लिए शतरंज के मोहरे थे। कई वर्षो से डैडी का कुछ पता नहीं है। ममी फिर गर्भवती हो गई और सोशल सर्विसेज़ ने फिर हमें अपने संरक्षण में ले लिया। मेरे सभी भाइ भाई-बहन गोरे चिट्टे हैं। उनकी आँखें नीली और बाल सुनहरे या भूरे हैं। पिछले दो वर्षों में मेरे तीनों भाई-बहन एक-एक करके सभी या तो गोद ले लिए गए या स्थाई रूप से किसी पालक अभिभावक के पास चले गए। कितने लोग मुझे देखने आए पर सब मुझे अस्वीकार कर चले गए। पार्क हाउस चिल्ड्रेन होम में आए हुए मुझे आठ वर्ष हो चुके हैं। यहाँ मेरी स्कूलिंग फिर से नियमित रूप से शुरू हुई। पढ़ने लिखने में मेरा मन नहीं लगता। पार्क-हाउस की ननें मुझे घुन्नी, आलसी और जंगली समझती। उन्होंने कभी मेरे उलझे मनोविज्ञान और कुंठाओं को समझने की कोशिश नहीं की। आए दिन मै वहाँ किसी न किसी छोटी-मोटी शरारत के कारण "चिल आउट बे" में दंडित होती। अब मैं सोलह वर्ष की पूरी हो चुकी हूँ। उस दिन मुझे नहीं मालूम था कि अगला दिन फिर मुझे अस्थिर और बुरी तरह उद्विग्न करनेवाला होगा। सुबह नाश्ते के पश्चात सिस्टर मारिया ने मुझे अपने कमरे में बुलाकर कहा, "सोशल वर्कर मिसेज़ हावर्ड अभी थोड़ी देर में यहाँ आएँगी और तुम्हें असेस्मेंट सेंटर ले जाएँगी।" मैं अवाक ! यह असेस्मेंट सेंटर क्या होता है ? मेरे पैरों के नीचे से ज़मीन खीसकती-सी लगी। मेरी आँखों में आँसू आ गए। असेस्मेंट सेंटर में से पनिस्मेंट सेंटर जैसी बू आ रही थी। मेरे साथ की कई और लड़कियाँ मुझसे भी कहीं ज्यादा शरारती है पर उन्हें अक्सर माफ कर दिया जाता है। मैं विभ्रमित "कन्फ्यूज्ड" थी। सोशल वर्कर कार ले कर आ चुकी थी। एक कोने में टेबुल-चेयर, पलंग और लॉकर के साथ एक सुर्ख रीडिंग लैम्प, कमरे की साज-सज्जा मुझे अच्छी लगी। यह मेरा अपना कमरा है। बिस्तर पर आकर लेट गई। कब आँख लगी पता नहीं। अचानक भयंकर शोरगुल के साथ धम-धम सीढ़ियाँ चढ़ने की आवाज़ आनी शुरू हो गई। ऐसा लग रहा था मानो भूचाल आ गया हो। अचानक सात-आठ लडकियाँ बिना किसी पूर्व सूचना और औपचारिकता के कमरे में घुस आई।



https://xtremepape.rs/

न किसी ने मेरा नाम पूछा, न ही अपना नाम बताया, बस मुझे देखते ही पूछने लगी कि मैं किस अपराध के कारण यहॉं भेजी गई हूँ। मैंने हकलाते हुए कहा, म म मुझे नहीं मालूम। एक ने मुझे मुँह बिराते हुए कहा, “झूठ बोलती है साली।” एक लंबी सी लड़की ने, मेरे चेहरे को अपने सख्त हाथों में उठाकर मेरी ऑंखों में ऑंखें डालकर पूछा, “तू दोगली (बास्टड) है ?” शब्द का सही अर्थ समझे बिना मैं बोली, “नहीं।” पीछे से किसी ने ऊँची आवाज में कहा, “पाकी है साली !” स्टुपिड पाकी। मैं पाकी नही हूँ। मेरा बाप गोरा था। “रंग गोरा होने से क्या होता है पाकी, तेरी काली ऑंखे बोलती है तू दोगली है। दोगली है।”

मेरा अपराध, उषा राजे सक्सेना, हंस (जुलाई २००८)

– कथानायिका की पीड़ा एवं उसके मनोभाव के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे ?

– प्रस्तुत गद्यांश की भाषा एवं शैली के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

– उपर्युक्त गद्य के शीर्षक की सार्थकता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

– कहानी में प्रस्तुत केन्द्रीय समस्या के प्रस्तुतीकरण में लेखक कहॉं तक सफल रहा है ?



https://xtremepape.rs/

२.

## औरत दुःख का एक गणित

पढ, पछताई औरतें, यहाँ प्रेम के पाठ,
बड़ी सरल थी औरतें दुःख थे कठिन विराट।

तन से बौनी औरतें, मन से नदी प्रगाढ,
पीठ पर धोती रही, दुख के तपे पहाड़

हत्या, डर, आतंक, भय, संशय, दुविधा, प्रीत,
सदियों से औरत रही, खुद से ही भयभीत।

गहरी थकन उदासियाँ दुःख मुट्ठी में भींच,
मुतअइयन (तैनात) थीं औरतें, घर-आँगन के बीच।

नमक पींसती औरतें, बनी नमक का ढेर
बदलेंगे दिन सोचकर, सपने लिए उकेर।

वीज, फसल, क्यारी कुआ, औरत, छप्पर, खेत
आंचल में बांधे रही, कठिन समय की रेत।

इतिहासों में औरतें, जौहर का त्यौहार
भूगोलों में औरतें चाँदी का बाज़ार।

रूहों के कद नापता, अंदर का एकांत
कभी दुःखों से औरतें, नहीं हुई हैं क्लांत

याद कर रही औरतें शिद्दत से इक प्रीत
ब्रह्माण्डों के होंठ पर बन पृथ्वी का गीत।

छोटे-छोटे खो गये, सपनों के आकाश
है उदास क्या औरतें ईश्वर हुआ उदास।

दिनेश शुक्ल, हंस (जुलाई २००९)

– इस कविता के शीर्षक की सार्थकता एवं चयन पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

– कविता का केन्द्रीय भाव को कवि कहाँ तक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर पाया है ?

– कविता की भाषा, शैली तथा प्रस्तुतीकरण के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं ?

– इस कविता की विषयवस्तु ने आपके मन पर क्या प्रभाव डाला है ?



https://xtremepape.rs/